कक्षा 12 समाज शास्त्र (सामाजिक आंदोलन) के नोट्स, महत्त्वपूर्ण प्रश्न और अभ्यास पत्र

पाठ 8

सामाजिक आंदोलन

मुख्य बिन्दु

1. **सामाजिक आन्दोजन**- ये समाज को एक आकार देते हैं। 19वीं सदी में अनेक सुधार आन्दोलन हुए जैसे- जाति व्यवस्था के विरूद्ध, भेदभाव के विरूद्ध और राष्ट्रीस स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन आदि।
2. **सामाजिक आन्दोलन के लक्षण**
   - लम्बे समय तक निंरतर सामूहिक गतिविधियों की आवश्यकता।
   - संगठन होना आवश्यक है।
   - सामाजिक आन्दोलन प्राय: किस जनहित के मामले में परिवर्तन के लिए होते है। जैसे आदिवासियों का जंगल पर अधिकार, विस्थापित लोगों का पुनर्वास।
   - संगठन में नेतृत्व तथा संरचना होती है।
   - सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए।
   - भाग लेने वाले लोगों के उद्देश्य तथा विचारधाराओं में समानता होती है।
   - सामाजिक आन्दोलन के विरोध में प्रतिरोधी में आन्दोलन जन्म लेते है। जैसे सती प्रथा के विरूद्ध आन्दोलन के खिलाफ धर्म सभा बनी, जिसने अंग्रेजों से सती प्रथा खत्म करकने के विरूद्ध कानून बनाने की मांग की।
   - सामाजिक आन्दोलन विरोध के विभिन्न साधन विकसित करते है-मोमबत्ती या मशाल जुलूस, नुक्कड़ नाटक गीत।
   - **सामाजिक परिवर्तन**
     (अ) निरंतरता
     (ब) संस्कृतिकरण, पश्चिमीकरण आदि

     सामाजिक आन्दोलन
     (अ) विशिष्ट उद्देश्य
     (ब) लोगों का निरन्तर सामाजिक प्रयास सती प्रथा विरोधी आंदोलन आदि

evidyarthi

https://www.evidyarthi.in

4. सामाजिक आन्दोलन के सिद्धान्त-

- सापेक्षिक वचन का सिद्धान्त

(1) सामाजिक संघर्ष तब उत्पन्न होता है जब सामाजिक समूह अपनी स्थिति खराब समझता है।

(2) मनोवैज्ञानिक कारण जैसे क्षोभ व रोष

- सीमाएँ-सामूहिक गतिविधि के लिए वंचन का आभास आवश्यक है लेकिन यह एक पर्याप्त कारण नहीं है।

(ब) दि लोजिक आफ कलैक्टिव एक्शन- सामाजिक आंदोलन में स्वंय का हित चाहने वाले विवेकी व्यक्तिगत अभिनेताओं का पूर्ण योग है। व्यक्ति कुछ प्राप्त करने के लिए इनमें शामिल होगा उसे इसमें जोखिम भी कम हो और लाभ अधिक।

सीमाए : सामाजिक आन्दोलन की सफलता संसाधनों व योग्यताओं पर निर्भर करती है।

(स) संसाधन गतिशीलता का सिद्धान्त- सामाजिक आन्दोलन में नेतृत्व, संगठनात्मक क्षमता तथा संचार सुविधाओं को एकत्र करना इसकी सफलता का जरिया है।

सीमाए : प्राप्त संसाधनों की सीमा में वंचित नहीं, नए प्रतीक व पहचान की रचना भी कर सकता है।

5. सामाजिक आन्दोलनों के प्रकार

(अ) प्रतिदानात्मक आन्दोलन- व्यक्तियों की चेतना तथा गतिधियों में परिवर्तन लाते है। जैसे केरल के इजह्वा समुदाय के लोगों ने नारायण गुरू के नेतृत्व में अपनी सामाजिक प्रथाओं को बदला।

(ब) सुधारवादी आन्दोलन- सामाजिक तथा राजनीतिक विन्यास को धीमे व प्रगतिशील चरणों द्वारा बदलना। जैसे- 1960 के दशक में भाषा के आधार पर राज्यों का पुनर्गठन व सूचना का अधिकार।

(स) क्रांतिकारी आन्दोलन- सामाजिक संबंधों में आमूल परिवर्तन करना तथा राजसत्ता पर अधिकार करना। जैसे- बोल्शेविक क्रांति जिसमें रूस में जार को अपदस्थ किया।

evidyarthi

https://www.evidyarthi.in

6. सामाजिक आंदोलन के अन्य प्रकार

- पुराना सामाजिक आंदोलन (आजादी पूर्व)- नारी आंदोलन, सती प्रथा के विरूद्ध आंदोलन, बाल विवाह, जाति प्रथा के विरूद्ध आंदोलन। यह राजनीतिक दायरे में होते थे। किसी निश्चित क्षेत्र अथवा देश में होते हैं।
- नया सामाजिक आन्दोलन- जीवन स्तर को बदलने व शुद्ध पर्यावरण के लिए।
  - बिना राजनीतिक दायरे के होते है तथा राज्य पर दबाव डालते है।
  - अन्तर्राष्ट्रीय हैं

7. परिस्थितिकीय आन्दोलन

उदाहरण- चिपको आंदोलन

चिपको आन्दोलन- उंत्तराचल में वनों को काटने से रोकने तथा पर्यावरण का बचाव करने के लिए स्त्रियां पेड़ों से चिपक गई ओर पेड़ काटने नहीं दिये। इस प्रकार यह आन्दोलन आर्थिक, परिस्थितिकीय व राजनीतिक बन गया।

8. वर्ग आधारित आन्दोलन

- किसान आन्दोलन- 1858-1914 के बीव स्थानीयता, विभाजन व विभिन्न शिकायतों से सीमित होने की ओर प्रवृत्त हुआ।
  - 1859-62 नील की खेती के विरोद्ध में।
  - 1857- दक्षिण का विद्रोह जो साहूकारी के विरोधा में।
  - 1928- लगान विरोद्धी आंदोलन
  - 1920- ब्रिटिश सरकार की वन नीतियों के विरूद्ध आंदोलन
  - 1920-1940 आल इंडिया किसान सभा
- स्वतंत्रता के समय दो मुख्य किसान आंदोलन हुए

  (i) 1946-1947 तिभागा आन्दोलन- यह संघर्ष पट्टेदारी के लिए हुआ।

  (ii) 1946-1951 तेलंगाना आन्दोलन- यह हैदराबाद की सांमती दशाओं के विरूद्ध था।
- स्वतंत्रता के बाद दो बड़े सामाजिक आंदोलन हुए

evidyarthi

https://www.evidyarthi.in

(i) 1967 नकस्ली आन्दोलन- यह आंदोलन भूमि को लेकर हुआ था।

(ii) नये किसानों का आंदोलन

- नया किसान आन्दोलन
  - 1970 में पंजाब व तमिलनाडु में प्रारंभ हुआ।
  - दल रहित थे।
  - क्षेत्रीय आधार पर संगठित थे।
  - कृषक के स्थान पर किसान जुड़े थे (किसान उन्हें कहा जाता है जो कि वस्तुओं के उत्पादन और खरीद दोनों में बाजार से जुड़े होते है।)
  - राज्य विरोधी व नगर विरोधी थे।
  - लाभ प्रद कीमतें, कृषि निवेश की कीमते, टैक्स व उधार की वापसी की माँगे थी।
  - सड़क व रेल मार्ग को बंद किया गया था।
  - महिला मुद्दों को शामिल किया गया।
- कामगारों का आन्दोलन
  - 1860 में कारखानों में उत्पादन का कार्य शुरू हुआ। कच्चा माल भारत से ले जाकर, इंग्लैंड में निर्माण किया जाता था।
  - बाद में ऐसे कारखानों को मद्रास, बंबई और कलकत्ता स्थापित किया गया।
  - कामगारों ने अपनी कार्य दशाओं के लिए विरोध किया।
  - 1918 में सर्वप्रथम मजदूर संघ की स्थापना हुई।
  - 1920 में एटक की स्थापना हुई (ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस-एटक)
  - कार्य के घंटों की अवधि को घटाकर 10 घंटे कर दिया गया।
  - 1926 में मजदूर संघ अधिनियम पारित हुआ जिसने मजदूर संघों के पंजीकरण कि प्रावधान किया, और कुछ नियम बनाए।

evidyarthi

https://www.evidyarthi.in

9. **जाति आधारित आन्दोलन**

(अ) दलित आन्दोलन- दलित शब्द मराठी, हिन्दी, गुजराती व अन्य भाषाओं के रूप में पहचान प्राप्त करने का संघर्ष है। दलित समानता, आत्मसम्मान, अस्पृश्यता उन्मूलन के लिए संघर्ष कर रहे हैं।

- मध्य प्रदेश में चमारों का सतनामी आन्दोलन
- पजांब में आदिधर्म आन्दोलन
- महाराष्ट्र में महार आन्दोलन
- आगरा में जाटवों की गतिशीलता
- दक्षिण भारत में ब्रह्ममण विरोधी आन्दोलन

(ब) पिछड़े वर्ग का आन्दोलन

- पिछड़े जातियों, वर्गों का राजनीतिक इकाई के रूप में उदय
- औपनिवेशिक काल में राज्य अपनी संरक्षित का वितरण जाति आधारित करते थे।
- लोग सामाजिक तथा राजनीतिक पहचान के लिए जाति में रहते हैं।
- आधुनिक काल में जाति अपनी कर्मकांडों विषय वस्तु छोड़ने लगी तथा राजनीति गतिशीलता के पंथ निरपेक्ष हो गई है।

(स) उच्चजाति का आन्दोलन- दलित व पिछड़ो के बढ़ते प्रभाव से उच्च जातियों ने उपेक्षित महसूस किया।

10. **जन जातीय आन्दोलन**- जनजातीय आंदोलनों में से कई मध्य भारत में स्थित है। जैसे- छोटा नागपुर व संथाल परगना में स्थित संथाल, हो, मुंडा, ओराव, मीणा आदि।

- झारखंड
  - बिहार से अलग होकर 2000 में झारखण्ड राज्य बना।
  - आन्दोलन की शुरूआत विरसा मुण्डा ने की थी।
  - ईसाई मिशनरी ने साक्षरता का अभियान चलाया।

evidyarthi

https://www.evidyarthi.in

- दिक्कुओं- (व्यापारी व महाजन) के प्रति घृणा।
- आदिवासियों को अलग-थलग किया जाना।

- आन्दोलन के मुख्यबिन्दु व मुद्दे
  - भूमि का अधिग्रहण
  - ऋणों की वसूली
  - वनों का राष्ट्रीकरण
  - पुर्नवास न किया जाना।
- पूर्वोत्तर राज्यों के आंदोलन- वन भूमि से लोगों का विस्थापन तथा पारिस्थितिकीय मुद्दे।

11. महिलाओं का आन्दोलन

- 1970 के दशक में भारत में महिला आन्दोलन का नवीनीकरण हुआ।
- महिला आन्दोलन स्वयत थे तथा राजनीतिक दलों से स्वतंत्र थे।
- महिलाओं के प्रति हिंसा के बारे में अभियान चलाए।
- स्कूल के प्रार्थना पत्र में माता-पिता दोनों का नाम शामिल।
- यौन उत्पीड़न व दहेज के विरोध में।
- कुछ महिला संगठनों के नाम- विमंश इंडिया एसोसिएशन (1971), आल इंडिया विमंश कान्फ्रेंस (1926)

2 अंक प्रश्न

1. सामाजिक आन्दोलन क्या होते है?
2. सामाजिक परिवर्तन व सामाजिक आन्दोलन में क्या अन्तर है?
3. किसान आन्दोलनों के दो उदाहरण लिखो।
4. एटक को समझाए।
5. जाति आधारित चार आन्दोलनों के उदाहरण लिखिए।

evidyarthi

https://www.evidyarthi.in

6. चार जन जातियों के नाम लिखें।
7. दो महिला संगठनों के नाम बताइए।

4 अंक प्रश्न

1. सुधारवादी व क्रांतिकारी आन्दोलनों में अन्तर बताइए।
2. प्रतिदानात्मक व सुधारवादी आन्दोलन आन्दोलन में अन्तर बताइए।
3. पारिस्थितिकीय आन्दोलन का वर्णन कीजिए।
4. नए किसान आन्दोलन पर नोट लिखिए।
5. उस मुद्दे के विषय में बताइए जिसके लिए झारखंड के नेताओं ने आन्दोलन किया।
6. महिलाओं ने आधुनिक युग में विभिन्न मुद्दों को उठाया है? इनका वर्णन कीजिए।

6 अंक प्रश्न

1. नए सामाजिक आन्दोलन व पुराने सामाजिक आन्दोलन में अन्तर स्पष्ट कीजिए।
2. सामाजिक आन्दोलनों की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
3. सामाजिक आन्दोलनों के सिद्धान्तों के विषय में बताइये
4. किसान आन्दोलन व नए किसान आन्दोलन में अन्तर लिखिए।

evidyarthi

https://www.evidyarthi.in